प्र० – शब्द शक्तियों का सामान्य परिचय दीजिए।

उ० – भारतीय काव्यशास्त्र में शब्दशक्तियों के सम्बन्ध में पर्याप्त विचार हुआ है। व्याकरणशास्त्र, न्यायदर्शन, मीमांसादर्शन तथा साहित्य में शब्द तथा शब्द शक्तियों के सम्बन्ध अनेक निर्णय किए जा चुके हैं। शब्द की अभिधा, लक्षणा और व्यंजना नामक तीन शक्तियाँ चिर प्रसिद्ध हैं। मीमांसकों ने तात्पर्या नामक शक्ति को भी मान्यता दी है।

शब्द एवं अर्थ के सम्बन्ध में विचार करने वाले तत्व को शब्दशक्ति कहते हैं। शब्द तथा अर्थ वाक्य की सार्थकता उनके अर्थ में है। अर्थवान शब्द ही शब्द कहलाते हैं। जिस शक्ति या व्यापार द्वारा अर्थबोध्य होता है, उसे शब्दशक्ति कहते हैं — 'शब्दार्थसम्बन्ध शक्ति'। यह शक्ति अर्थबोधक व्यापार का मूल कारण भी कहलाती है। शब्द की शक्ति की भी असीम है। शब्द, उच्चारण का ही हमारे मन, कल्पना और अनुभूति पर प्रभाव पड़ता है। अचार या चटनी का नाम लेते ही मुँह में पानी भर आता है। भूत या साँप शब्द का उच्चारण करते ही मन में भय का संचार होता है। यह अर्थगत है। अतः जिस शक्ति के द्वारा शब्द का यह अर्थगत प्रभाव पड़ता है, वही शब्दशक्ति कहलाती है। शब्द का अर्थबोध कराने वाली शक्ति ही शब्दशक्ति है। वह एक प्रकार का शब्द और अर्थ का समन्वय है। शब्द का व्यापार अर्थगत व्यापार है। आचार्य चिन्तामणि ने लिखा है – "जो सुन पड़े सो शब्द है, समुझि परै सो अर्थ।"

अर्थात् जो सुनाई पड़े वह शब्द है, तथा उसे सुनकर जो समझ में आए वह उसका अर्थ है।

शब्द तीन प्रकार होते हैं – वाचक, लक्षक और व्यंजक। इन्हीं के अनुरूप ही अर्थ भी तीन प्रकार के होते हैं – वाच्यार्थ, लक्ष्यार्थ और व्यंग्यार्थ। शब्द और अर्थ के अनुरूप ही

Scanned with CamScanner

ही शब्द की तीन शक्तियाँ होती हैं — अभिधा, लक्षणा और व्यंजना। मीमांसक आचार्य कुमारिल भट्ट तात्पर्या नामक एक चौथी शब्द शक्ति भी मानते हैं।

## अभिधा —

साक्षात् संकेतित अर्थ को बताने वाली शब्द की प्रथम शक्ति को अभिधा कहते हैं। वह शब्द वाचक कहलाता है। मुख्य या प्रथम अर्थ की बोधक होने के कारण इस अभिधा शक्ति को मुख्य या अग्रिमा भी कहते हैं। मुकुलभट्ट ने 'अभिधावृत्तिमातृका' में लिखा है कि जिस प्रकार शरीर के सभी अवयवों में सर्वप्रथम मुख दिखायी देता है, उसी प्रकार सभी प्रकार के अर्थों से पहले इसी का बोध होता है। इसका बोध सभी प्रकार के प्रतीत अर्थों से पूर्व ही हो जाता है, अतः इसे शब्द की प्रथमा शक्ति कहते हैं।

अभिधा शक्ति से जिन वाचक शब्दों का अर्थ-बोध होता है, वे तीन प्रकार के होते हैं — रूढ़ि, यौगिक और योगरूढ़।

## लक्षणा —

शब्द का अर्थ अभिधामात्र में ही सीमित नहीं रहता है। जब मुख्यार्थ या वाच्यार्थ में बाधा आती है, तब रूढ़ि या प्रयोजन के आधार पर दूसरा अर्थ लगाया जाता है। यह अर्थ वक्ता के प्रयोग के आधार पर होता है। यदि वक्ता का आशय अभिधागम्य नहीं होता है, तो उससे सम्बद्ध दूसरा अर्थ, लक्ष्यार्थ लक्षणावृत्ति से ज्ञात होता है — "मुख्यार्थभिन्नाभिन्नार्थसूचकः लक्ष्यार्थः"।

आचार्य मम्मट के अनुसार मुख्य अर्थ के ज्ञान में बाधा होने पर और उस मुख्यार्थ के साथ सम्बन्ध (योग) होने पर प्रसिद्धि या प्रयोजनवश अन्य अर्थ जिस शब्द-शक्ति से विदित होता है उसे लक्षणा कहते हैं। लक्षणा में मुख्यार्थ में बाधा, मुख्यार्थ तथा लक्ष्यार्थ का परस्पर योग, रूढ़ि या प्रयोजन में से किसी एक का होना आवश्यक है।

लक्षणा के अनेक भेद - उपभेदों की चर्चा काव्यशास्त्र में हुई है। आचार्य मम्मट लक्षणा के छः मानते हैं— गौणी लक्षणा, शुद्धा लक्षणा, उपादान लक्षणा, लक्षण-लक्षणा, सारोपा लक्षणा और साध्यवसाना लक्षणा।

आचार्य विश्वनाथ ने लक्षणा के सोलह मुख्य भेद माने हैं। काव्यशास्त्र में लक्षणा के अस्सी भेदों तक की चर्चा है।

## व्यंजना —

शब्दशक्तियों में तीसरी शब्दशक्ति 'व्यंजना' है। जब अभिधाशक्ति अर्थ बताने में असमर्थ हो जाती है तो लक्षणा के द्वारा अर्थ बताने की चेष्टा की जाती है किन्तु कुछ ऐसे भी अर्थ होते हैं जिनकी प्रतीति अभिधा एवं लक्षणा द्वारा नहीं होती। इस स्थिति में एक तीसरी शक्ति की आवश्यकता प्रतीत होती है जिसे वहाँ व्यंजना शक्ति कहते हैं काम करती है। आचार्य मम्मट के अनुसार संकेत न होने के कारण जब अभिधा नामक शब्दशक्ति समर्थ होता और प्रयोजन की प्रतीति में रूढ़ि और प्रयोजन न होने पर लक्षणा भी समर्थ नहीं रहती है तब व्यंजना के अतिरिक्त कोई शब्द व्यापार नहीं। व्यंजना दो प्रकार की होती है — शाब्दी व्यंजना एवं आर्थी व्यंजना। शाब्दी व्यंजना में शब्दों का प्राधान्य एवं महत्व होता है और आर्थी व्यंजना में अर्थ की सहायता से व्यंग्यार्थ का ज्ञान होता है। काव्य में सरसता, प्रभविष्णुता एवं चमत्कार की दृष्टि से अच्छ व्यंजना का बहुत अधिक महत्व है।

## तात्पर्या —

वाचक, लक्षक तथा व्यंजक शब्दों के वाच्यार्थ, लक्ष्यार्थ तथा व्यंग्यार्थ तीन अर्थ होते हैं। मीमांसकों के एक वर्ग ने तात्पर्या नामक वृत्ति भी स्वीकार की है। वाक्य में योग्यता, आकांक्षा और आसत्ति (सन्निधि) का होना आवश्यक है। वाक्य के अनेक पदों का पृथक-पृथक बोध अभिधा द्वारा होता है। इस वाक्य के बिखरे हुए पदों के अर्थों को परस्पर जोड़ कर जो वाक्य बनता है उसके अर्थ का बोध कराने वाली शक्ति का नाम तात्पर्या शक्ति है।

Scanned with CamScanner